चाइल्ड आर्टिस्ट्स

हर बच्चे को अपने पापा से बहुत प्यार होता है। बच्चों के लिए उसके पापा किसी सुपर हीरो से कम नहीं होते। फादर्स-डे के मौके पर कुछ टीवी चाइल्ड आर्टिस्ट्स बता रहे हैं कि किन खूबियों की वजह से वे अपने पापा को दुनिया का बेस्ट पापा मानते हैं। साथ ही ये चाइल्ड आर्टिस्ट्स यह भी बता रहे हैं कि इस बार फादर्स-डे कैसे सेलिब्रेट करेंगे।

माय पापा इज द बेस्ट

पापा की सबसे बड़ी खासियत है उनका पेशेंस और पॉजिटिव एटिट्यूडः आर्यन प्रजापति

आर्यन प्रजापति एंड टीवी के शो 'हप्पू की उलटन-पलटन' में ऋतिक का रोल प्ले कर रहा है, जो दर्शकों को खूब भा रहा है। इस बार फादर्स-डे पर उसकी क्या प्लानिंग है, हंसते हुए बताता है, 'मैं एक कार्ड बना रहा हूं, जिसमें मैं पापा के लिए अपनी फीलिंग्स लिखूंगा। साथ ही मैं उनका फेवरेट केक भी लाऊंगा। हम सब मिलकर घर पर छोटा सा सेलिब्रेशन करेंगे। पापा को क्रिकेट बहुत पसंद है, तो मैंने सोचा है कि हम दोनों मिलकर पास के मैदान में क्रिकेट खेल कर थोड़ा टाइम स्पेंड करेंगे। इस फादर्स-डे मैं अपने पापा को यह जताना चाहता हूं कि वो मेरे लिए बहुत स्पेशल हैं।' पापा की वो बात जो आर्यन के लिए जिंदगी भर के लिए सबक है, वह बताता है, 'मेरे पापा अकसर कहते हैं कि जब हम अपना काम पूरी मेहनत, ईमानदारी से करते हैं तो सफलता निश्चित ही मिलती है।' आर्यन के लिए उसके पापा दुनिया के बेस्ट पापा हैं।

वह कहता है, 'मेरे पापा की सबसे बड़ी खासियत है उनका पेशेंस और पॉजिटिव एटिट्यूड। चाहे कितनी भी बड़ी टेंशन हो, वो हमेशा शांत रहते हैं। बहुत ही सुलझे तरीके से सिचुएशन को हैंडल करते हैं। वो ना सिर्फ एक अच्छे पापा हैं, मेरे बेस्ट फ्रेंड और मेंटर भी हैं। मेरे पापा दुनिया के बेस्ट पापा हैं।' *

पापा बहुत हार्डवर्किंग हैं आरिया सकारिया

सोनी सब के शो 'तेनाली रामा' में लछमा का रोल कर रही आरिया सकारिया फादर्स-डे को लेकर काफी उत्साहित है। इस बार फादर्स-डे पर उसकी क्या प्लानिंग है, आरिया बताती है, 'इस दिन मैं अपने पापा को लेकर बाहर घूमने जाऊंगी। हम बाहर ही ब्रेकफास्ट करेंगे, शॉपिंग करेंगे और मूवी देखेंगे।' पापा की कोई ऐसी बात, जो आरिया के लिए जिंदगी भर का एक सबक बन गई हो, यह पूछने पर वह बताती है, 'मेरे डैड ने मुझे सिखाया है कि लाइफ में कोई भी प्रॉब्लम आ जाए, कभी हार मत मानना, क्योंकि कोई भी ऐसी प्रॉब्लम नहीं है, जिसका सॉल्यूशन न हो। पापा की यह बात मेरी जिंदगी का बहुत बड़ा सबक है, जिसे मैं हमेशा याद रखूंगी।' आरिया की नजर में उसके पापा की वह क्वालिटी, जो उन्हें बेस्ट पापा बनाती है, वह बताती है, 'मेरे डैड की सबसे अच्छी क्वालिटी यह है कि वो मेरी मॉम की बहुत रेस्पेक्ट करते हैं। वह हर काम में मां की हेल्प करते हैं। मेरे पापा बहुत हार्ड वर्किंग हैं। चाहे जितना भी थक गए हों, वो हमारे साथ जरूर टाइम स्पेंड करते हैं! इन्हीं वजहों से मेरे पापा दुनिया के बेस्ट पापा हैं।' *

पापा ने दी है सीख कभी गिव-अप नहीं करना, चाहे जो भी हो जाए : अहनाफ खत्री

जी टीवी के शो 'कुमकुम भाग्य' में कीर्तन की भूमिका निभा रहा अहनाफ खत्री के लिए उसके पापा उसकी लाइफ में सबसे इंपॉर्टेंट हैं। वह कहता है, 'मुझे अपने पापा से बहुत प्यार है, वो मेरे लिए खुद से भी ज्यादा इंपॉर्टेंट हैं।' अहनाफ ने इस बार फादर्स-डे पर क्या कुछ खास प्लान कर रखा है, वह बताता है, 'अबकी मैं फादर्स-डे बहुत स्पेशल तरीके से सेलिब्रेट करूंगा। मैं अपने पापा के साथ घूमने जाऊंगा। हमारे साथ कोई और नहीं होगा, सिर्फ मैं और मेरे पापा होंगे।

मेरे पापा को नाइनटीज के गाने बहुत पसंद हैं। इसलिए मैंने पापा के लिए एक स्पीकर मंगवा लिया है। यह फादर्स-डे पर मेरी तरफ से पापा के लिए सरप्राइज गिफ्ट होगा।' अहनाफ से यह पूछने पर कि वह अपने पापा की कोई ऐसी क्वालिटी बताए, जो उन्हें वर्ल्ड का बेस्ट पापा बनाती है, वह तुरंत जवाब देता है, 'कोई एक क्वालिटी नहीं, पापा की सारी क्वालिटीज उन्हें वर्ल्ड्स बेस्ट पापा बनाती हैं।' अहनाफ के लिए पापा की बताई कौन-सी बात उसके लिए बहुत बड़ा सबक है, वह बताता है, 'मेरे पापा मुझसे हमेशा कहते हैं- 'ट्राय ट्राय टिल यू सक्सीड और कभी गिव-अप नहीं करना, चाहे जो भी हो जाए। मुझे उनकी ये बात हमेशा याद रहेगी।' *

वह मेरे आइडियल, मेरे बेस्ट फ्रेंड हैंः उर्वा सावलिया

उर्वा सावलिया सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन के पीरियड ड्रामा 'चक्रवर्ती सम्राट पृथ्वीराज चौहान' में पृथ्वीराज चौहान के बचपन का रोल निभा रहा है। उर्वा की इस बार फादर्स डे पर क्या प्लानिंग है, इस सवाल पर वह जवाब देता है, 'इस बार फादर्स-डे पर मैने अपनी मम्मी के साथ मिलकर अपने पापा के लिए एक खास सरप्राइज प्लान किया है, लेकिन इसे अभी बताऊंगा नहीं, बता दिया तो सरप्राइज कैसा।'

उर्वा अपने पापा की वो क्वालिटीज बताता है, जो उन्हें वर्ल्ड्स बेस्ट पापा बनाती हैं। वह कहता है, 'मेरे पापा हमेशा से मेरे लिए हीरो रहे हैं। उनके मार्गदर्शन ने मुझे हर मुश्किल घड़ी में रास्ता दिखाया और एक ताकत दी है। मेरे पापा ना सिर्फ मेरे आइडियल हैं, बल्कि मेरे बेस्ट फ्रेंड भी हैं। मुझे उनकी सादगी सबसे ज्यादा पसंद है। उसी सादगी और संयम को मैं भी अपनाना चाहता हूं। मेरे पापा मेरे लिए एक पावर हाउस की तरह हैं।' *

प्रस्तुतिः बालभूमि फीचर्स

फीलिंग्स / मोनिका शर्मा

पापा को दो प्यार भरा सरप्राइज

बच्चो, हर साल की तरह इस बार भी तुमने जरूर फादर्स-डे सेलिब्रेशन की प्लानिंग की होगी। इस प्लानिंग के साथ तुम कुछ अलग तरीके से फादर्स-डे सेलिब्रेट कर अपने लविंग पापा को सरप्राइज कर सकते हो। कैसे, जानो।

बच्चो, तुम्हारे हर स्पेशल दिन पर सरप्राइज देने वाले पापा को फादर्स-डे पर तुम भी सरप्राइज दे सकते हो। पापा के दिल को छू जाने वाला कुछ करके, तुमको भी बहुत खुशी मिलेगी। पापा के लिए तो यह सदा के लिए एक यादगार दिन बन जाएगा। इस बार फादर्स-डे पर पापा को हैप्पी और डिलाइटफुल, आश्चर्य में डालने वाले प्यारे काम करना ना भूलना।

प्यारा वीडियो मैसेजः पापा तुमको सुपरहीरो लगते हैं या लविंग-केयरिंग डैडी। साथ मस्ती करने वाले दोस्त जैसे लगते हैं या सलाह देने वाले गाइड। रोल मॉडल हैं या सहज प्यारे से पर्सन। वीडियो में खुलकर हंसते-मुस्कुराते हुए अपने पापा के लिए सब कुछ कह डालो। फादर्स-डे के खास दिन पर विश करते हुए अपने मन की बातें कहने वाला वीडियो पापा को सचमुच स्पेशल फील करवाएगा। अपनी सी बातों को समेटते हुए यूनीक सा वीडियो मैसेज बनाने का आइडिया कमाल कर जाएगा। फादर्स-डे को अलग अंदाज में सेलिब्रेट करने का अंदाज पापा को खूब खुशी देगा।

लिखो दिल छूने वाला पत्रः पेंसिल पकड़ने से लेकर अच्छे से पढ़ने-लिखने तक, तुम्हारी सीखने-समझने की जर्नी का हर दिन पापा के लिए भी बहुत खास होता है। इसीलिए तुम्हारी अपनी हैंडराइटिंग में लिखे लेटर का हर अक्षर पापा के लिए अनमोल होगा। साथ ही तुम्हारी लिखी बातें सदा के लिए एक सहेजने वाला गिफ्ट बन जाएंगी। इस बार डैडी के लिए प्यार, रेस्पेक्ट और प्यारी-प्यारी मेमोरीज को पत्र में लिख डालो। अपने लिखे पत्र में इमोशंस को प्रेजेंट करने के लिए इमोजी भी बनाओ। चुपचाप पापा की अलमारी या तकिए के नीचे अपना पत्र रख दो। इस तरह लिखी गई बातों को पढ़ कर पापा के चेहरे पर मुस्कान आ जाएगी।

आर्टिस्टिक एक्सप्रेशनः तुम्हारे रंग-बिरंगे चित्र और आड़ी - तिरछी रेखाएं पापा को खूब भाती हैं। इस बार अपने हाथ से सुंदर सा फादर्स-डे कार्ड, पेंटिंग या एक आर्टिस्टिक पीस बनाकर पापा को देना मत भूलना। अपने बनाए आर्ट पीस को सुंदर स्टिकर से सजाकर प्यारा सा मैसेज भी दे सकते हो। कार्ड पर अपने हाथ से बनाई सिंपल पेंटिंग भी बना सकते हो। कोई भी आर्टवर्क डैडी के लिए एक परफेक्ट होममेड गिफ्ट होगा, अफेक्शन से भरा अट्रैक्टिव उपहार। बच्चो, पापा ऐसी बातों को खुलकर बताते नहीं हैं पर तुम्हारा बनाया आर्ट-क्राफ्ट पापा के लिए प्यार जताने का सबसे सुंदर तरीका है। इसे जब भी पापा देखेंगे, उनके चेहरे पर स्माइल आ जाएगी। *

जीके क्विज-157

1. हाल ही में चर्चा में रहे डी. गुकेश का संबंध किस खेल से है?
2. 51वां जी 7 शिखर सम्मेलन किस देश में आयोजित किया जाएगा?
3. संयुक्त राष्ट्र महासभा के 80वें सत्र का अध्यक्ष किसे चुना गया है?
4. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 'दिल्ली चलो' का नारा किसने दिया था?
5. हीराकुंड बांध किस राज्य में स्थित है?
6. सर्वप्रथम किस विदेशी यात्री ने भारत की यात्रा की थी?
7. कनाडा की राजधानी कहां है?
8. रतौंधी रोग किस विटामिन की कमी से होता है?
9. विश्व की सबसे गहरी झील कौन-सी है?
10. मानव शरीर का कौन-सा अंग खून साफ करने का काम करता है?

बच्चो, जीके क्विज-157 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-156 का उत्तर: 1.ओपल सुचाता चुआंगसरी, 2.रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, 3.शुभमन गिल, 4.वी. एस. रामादेवी, 5. 21 जून, 6.मौलाना अबुल कलाम आजाद, 7.गोवा, 8.जापान, 9.वेलिंगटन, 10.क्लोरोफ्लोरोकार्बन

जीके क्विज-156 का सही उत्तर देने वालेः निलेश-जांजगीर, मुकेश-बिलासपुर, सौम्या-रायगढ़, कबीर-हिसार, सौरभ-बिलासपुर, प्रतीक-बलौदा बाजार, दिव्या-रोहतक, साकेत-महासमुंद, कमल-महेंद्रगढ़, आशीष-भोपाल

हंसगुल्ले

पापाः लड़के को अंग्रेजी में 'ही' कहते हैं, तो कई लड़कों को अंग्रेजी में क्या कहेंगे?

सोनू (कुछ देर सोचने के बाद): पापा, जितने लड़के होंगे, उतने 'ही ही ही ' कहेंगे।

-गोपी, बिलासपुर

एक यात्री रेलगाड़ी से उतरा। उसने स्टेशन पर खड़े रिंकू से पूछाः यह कौन-सा स्टेशन है?

रिंकूः अंकल, यह रेलवे स्टेशन है।

राशि, रायपुर

चुन्नू बर्फ का टुकड़ा उठा कर उसे घूरे जा रहा था...

पापा ने पूछाः क्या देख रहे हो?

चुन्नूः देख रहा हूं कि यह लीक कहां से हो रहा है?

-कोकिला, रोहतक

कहानी

हरीश कुमार 'अमित'

कितने अच्छे पापा!

विपुल को यही लग रहा था कि सोसाइटी में होने वाले शतरंज का फाइनल मैच हार जाएगा, जबकि वह कई बार फाइनल मैच जीत कर शतरंज बालश्री का पुरस्कार पा चुका था। इधर दो बार से वह फाइनल मैच में हार जा रहा था। लेकिन पापा ने उसकी जीत के लिए उसका आत्मविश्वास बढ़ाने की कोशिश की। क्या इसके बाद विपुल फाइनल मैच में विजयी हुआ?

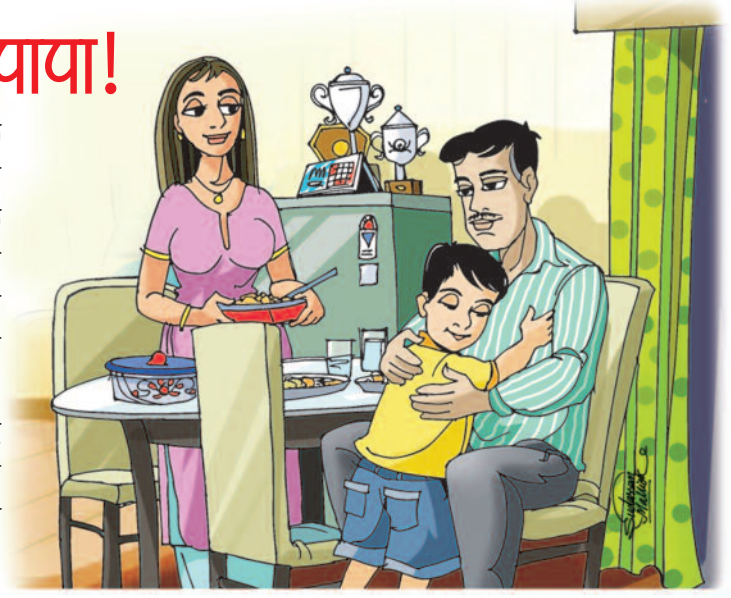

शनिवार की सुबह थी। विपुल बहुत बेचैन था। उसकी बेचैनी का कारण जून महीने की गर्मी नहीं थी। वह इसलिए बेचैन था, क्योंकि अगले दिन इतवार को उसका शतरंज का फाइनल मैच था। उसे डर लग रहा था कि कहीं पिछली दो बार की तरह इस बार भी वह फाइनल मैच में हार न जाए।

विपुल जिस हाउसिंग सोसाइटी में रहता है, उसमें बहुत सारे फ्लैट हैं। उस सोसाइटी में हर वर्ष जून और दिसंबर की स्कूल की छुट्टियों में बच्चों के लिए खेल-कूद की अनेक प्रतियोगिताएं होती हैं। विपुल शतरंज की प्रतियोगिता में भाग लेता है। वह फाइनल में जीतकर शतरंज बालश्री का पुरस्कार कई बार पा चुका है। लेकिन पिछले साल जून और दिसंबर में हुई शतरंज प्रतियोगिता में जीतते-जीतते वह फाइनल तक तो पहुंच गया था, पर फाइनल मैच में हार गया था। इसलिए उसे डर सता रहा था कि वह कहीं इस बार भी हार न जाए। वह इसी सोच में गुमसुम-सा बैठा था। तभी विपुल के पापा उसके पास आए और बोले,'बेटा, आज तो मेरे ऑफिस की छुट्टी है। चलो, शतरंज खेलते हैं।'

विपुल के पापा शतरंज के बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं। उन्होंने शतरंज की कई बड़ी प्रतियोगिताओं में बहुत से पुरस्कार जीते हैं। विपुल आज तक पापा से शतरंज में जीत नहीं पाया है। पापा के साथ खेलते हुए उसे लग रहा था कि वह आज भी हार जाएगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। कुछ देर बाद वह जीत गया और पापा हार गए।

विपुल की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था, क्योंकि वह पहली बार पापा से जीता था। तभी पापा बोले, 'आओ, एक बाजी और खेलते हैं।' इस बार तो विपुल को पूरी उम्मीद थी कि वह हार जाएगा, लेकिन इस बार भी वह जीत गया। उस दिन शाम तक विपुल ने पापा के साथ शतरंज की आठ बाजियां खेलीं और सभी में वह जीत गया। यह देख पापा विपुल से बोले, 'बेटा, अगर तुम मुझे हरा सकते हो तो फिर कल के मैच में एक बच्चे को क्यों नहीं हरा सकते?'

विपुल को अब अपने आप पर विश्वास हुआ कि वह कल का मैच जीत सकता है।

अगले दिन जब शतरंज का फाइनल मैच शुरू हुआ तो विपुल के पापा भी मैच देखने गए। पापा को अपने आस-पास पाकर विपुल पूरे आत्मविश्वास से खेलने लगा और दूसरे बच्चे को हराकर जीत भी गया। दोपहर बाद प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित हुए और विपुल को शतरंज बालश्री पुरस्कार प्रदान किया गया। घर आते हुए खुशी के मारे उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

शाम को पापा को बस से भोपाल के लिए निकलना था। लगभग बारह घंटे की बस यात्रा थी। अगले दिन सुबह से वहां उनकी एक हफ्ते की सरकारी ट्रेनिंग थी। खाना खाते हुए विपुल ने पूछा, 'पापा, आप वापस कब आएंगे?'

'इतवार सुबह की राजधानी ट्रेन से आऊंगा। इस ट्रेन में तो सात घंटे ही लगेंगे। दोपहर बाद तक घर पहुंच जाऊंगा।' पापा ने जवाब दिया। यह सुनकर विपुल बोला,'पापा, आप राजधानी से वापस आएंगे तो फिर राजधानी से ही क्यों नहीं गए? बस से तो टाइम भी ज्यादा लगेगा और बस में गर्मी और भीड़-भाड़ भी होगी। आप ठीक तरह से सो भी नहीं पाएंगे। कल सुबह भोपाल पहुंचेंगे तो बिना आराम किए आपको ट्रेनिंग के लिए जाना होगा।'

'हां, यह तो है।' पापा बहुत आहिस्ता से बोले।

'पापा, आप आज दिन में राजधानी से जाते तो आराम से एसी ट्रेन का सफर करते और रात को ठीक तरह से सो भी पाते।' विपुल की इस बात का पापा ने कोई जवाब नहीं दिया और चुपचाप खाना खाते रहे।

तभी मम्मी बोलीं, 'बेटा, तुम्हारे पापा आज सुबह इसलिए ट्रेन से नहीं गए ताकि वे मैच जीतने के लिए तुम्हारा हौसला बढ़ा सकें।'

यह सुनकर विपुल बहुत भावुक हो उठा, बोला, 'पापा, आप मेरे लिए इतना कष्ट सहकर जाएंगे भोपाल, जबकि आप बड़े आराम से ट्रेन से जा सकते थे।' मम्मी फिर बोलीं, 'और यह जो कल तुमने अपने पापा को आठ बार हराया है न, यह भी कोई अपने-आप नहीं हो गया। तुम्हारे पापा शतरंज के इतने अच्छे खिलाड़ी हैं कि बड़े-बड़े खिलाड़ी इनसे नहीं जीत पाते, लेकिन तुम इनसे कैसे जीत गए, वह भी एक ही दिन में लगातार आठ बार! सोचा क्या तुमने?'

मम्मी की बात सुनकर विपुल सोच में पड़ गया। मम्मी आगे बोलीं, 'बेटा, यह भी तुम्हारे पापा की ही सोची-समझी तरकीब थी। ये जानबूझकर तुम से आठ बार हारे थे ताकि तुम्हारा आत्मविश्वास लौट आए और तुम आज का फाइनल मैच जीत सको।'

मम्मी की बात सुनकर विपुल उठा और पापा के गले लगकर बोला, 'पापा, आप कितने अच्छे हैं..!'

पापा भी प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगे। *

कविता / देवी प्रसाद गौड़

मेरे फौजी पापा

सदा फूल से खिलते पापा,
हंसते-हंसते घर में आते।
कहां छुपी है परी हमारी,
सबसे पहले मुझे बुलाते।।
जब भी पापा घर में आते,
तरह-तरह की टॉफी लाते।
मधुर मंद मुस्काते जाते,
एक-एक कर मुझे दिखाते।।
टॉफी देख पंख लग जाते,
मैं घर में उड़ने लग जाती।
पापा के कंधे पर बैठी,
भैया से लड़ने लग जाती।।
सर चढ़ी लाड़ली पापा की,
मां, मुझको आंख दिखाती है।
कभी प्यार से कभी झगड़ कर,
भैया का हिस्सा खाती है।।
पापा कहते सब बच्चों में,
बिटिया लगती मुझको प्यारी।
बहुत गर्व है मुझको इस पर,
इसकी बातें सबसे न्यारी।।
रोज सबेरे मुझसे कहती,
पापा मेरी गुल्लक खुलवाओ।
उसमें पैसे और मिलाकर
अच्छी सी बंदूक मंगाओ।।
सुबह-शाम टीवी पर सुनती,
सिंदूरी मान बढ़ाऊंगी।
फौजी पापा की बेटी हूं,
सीमा पर लड़ने जाऊंगी।।
बहुत खुशी है मुझको बिटिया,
सपना साकार कराऊंगा।
अभी बड़ी हो जाओ लाड़ो,
तुमको कप्तान बनाऊंगा।।

रंग भरो-177

रंग भरो-177 में दिए गए चित्र को तुम लोगों ने बहुत अच्छे से रंगकर हमें भेजा। उनमें से चुना गया सबसे अच्छा चित्र हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उसे रंगकर भेजने वाले बच्चे के चित्र के साथ कुछ अन्य बच्चों के नाम और चित्र भी प्रकाशित कर रहे हैं।

श्याम, धमतरी

वसनि, रायपुर

सानवी, अंबिकापुर

रितेश, मटियारी

मिष्ठी, महासमुंद

डिपल, दुर्ग

इनके भी चित्र रहे प्रशंसनीय

आस्तिका-चांपा, आतिया-बहादुरगढ़, अंकित-धमतरी, अथर्व-बिलासपुर, डॉली-दुर्ग, पलक-अटेली मंडी, रुपाली-दिल्ली, ट्विंकल-महेंद्रगढ़, कविता-कटनी, राकेश-धमतरी, अंकित-गुना, दिनेश-करनाल, विनोद-बिलासपुर, ज्योति-कोरबा

रंग भरो 178

बच्चो, यहां दिए गए ब्लैक एंड व्हाइट चित्र में भाई-बहन फादर्स डे सेलिब्रेट कर रहे हैं। इस प्यारे से चित्र को मनचाहे रंगों से रंग कर हमें भेजो। जिस बच्चे का चित्र सर्वश्रेष्ठ होगा, उसे हम बालभूमि में प्रकाशित करेंगे। चित्र के साथ अपनी फोटो, अपना और शहर का नाम हमें इस पते पर भेजोः संपादक-फीचर, हरिभूमि कार्यालय, 129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग, पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली- 110035 या ई-मेल आईडी balbhoomihb@gmail.com पर मेल करो।

तुम्हारे लिए किताब / सुधा श्रीवास्तव

जीवन पथ-प्रदर्शित करती कहानियां

फादर्स-डे के आस-पास पापा से जुड़ी कोई कहानी मिल जाए तो तुम झटपट पढ़ डालोगे। असल में हर बच्चा अपने पापा से भावनात्मक रूप से बहुत जुड़ा होता है। पापा की सीखें, जीवन में पथ-प्रदर्शक का काम करती हैं, बाधाओं को दूर करती हैं, खुशियों से भरती हैं। इंदिरा त्रिवेदी का कहानी संग्रह 'पापा ने सही कहा था' की शीर्षक कहानी पढ़ते समय यही महसूस होता है। कहानी में मिनी परीक्षा नहीं देना चाहती है, क्योंकि उसने सही ढंग से तैयारी नहीं की है। लेकिन उसके पापा प्यार से समझाते हैं, 'तो क्या हुआ बेटा, क्लास में तुमने जो कुछ भी सुना-समझा हो, जो भी जानकारी हो, परीक्षा में आए प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में लिख देना।' पापा को विश्वास है, मिनी होशियार है, प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखेगी और अच्छे अंक लाएगी। होता भी यही है। मिनी को समझ में आ जाता है कि बड़े लोग अपने जीवन अनुभव के आधार पर जो कहते हैं, सही कहते हैं। यह भी सही है कि कोशिश करने वाले असफल नहीं होते। इस संग्रह में कुल बारह कहानियां हैं। इन कहानियों में पैरेंट्स, बच्चों को जीवन की जरूरी सीख ही नहीं देते, उन्हें संस्कारवान भी बनाते हैं। संग्रह की कहानियां पढ़ते समय बच्चो, तुम्हें लगेगा, ये तुम्हारे आस-पास की अपनी कहानियां हैं। *

किताबः पापा ने सही कहा था, लेखिकाः इंदिरा त्रिवेदी, मूल्यः 200 रुपए, प्रकाशकः भव्या पब्लिकेशन, भोपाल